International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत में वत्तीय वकास, मुद्रास्फीति और आ थक वकास का एक अध्ययन

[1] गब्रिएल सुरीन [2] डॉ मनोज कुमार

[1] शोध प्रज्ञ, स्कूल ऑफ़ कला एवं मान वकी, अर्थशास्त्र वभाग, वाई बी एन यूनिव र्सटी, रांची, झारखंड

[2] एसो सएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ़ कला एवं मान वकी, अर्थशास्त्र वभाग, वाई बी एन यूनिव र्सटी, रांची, झारखंड

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत में वत्तीय वकास, मुद्रास्फीति और आ थक वकास के महत्वपूर्ण पहलुओं को सार्थकता से वचार करना है। वत्तीय वकास का अर्थ वत्तीय संस्थाओं के वकास, वत्तीय सेवाओं के पहुंच का वस्तार, और आ थक सुरक्षा के प्रति लोगों की अ धक सजगता को सुनिश्चित करने का है। मुद्रास्फीति के चरण और आ थक वकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लए जरूरी होता है। भारत के वत्तीय वकास का सफर ववादास्पद था, ले कन यह अब वश्वासयोग्य रूप से आगे बढ़ रहा है। बैं कंग सेक्टर के मॉडर्नीकरण, डजिटल पेमेंट सस्टम की प्रसारण, और फनटेक क्षेत्र में नई प्रौद्यो ग कयों का उपयोग ने वत्तीय सेवाओं की पहुंच में सुधार कया है। मुद्रास्फीति के मामले में, भारत ने एक उ चत और स्थिर मुद्रा प्रबंधन की ओर कदम बढ़ाया है। इसका माध्य मक लक्ष्य मुद्रा की स्थिरता और मूल्य स्थिरता को सुनिश्चित करना है, जिससे हानिप्रद प्रभावों से बचा जा सके। आ थक वकास के संदर्भ में, भारत को अ भयांत्रिकता के क्षेत्र में नए उत्थानों के लए तैयार होना होगा। यह नक्शे पर वकास और समृ द्ध के मार्ग को नये ऊर्जा स्रोतों, उन्नत तकनीकों, और आधुनिक उत्पादन प्र क्रयाओं की ओर मोड़ सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिचय

भारत के सन्दर्भ में पछले दशक की सबसे बड़ी घटना इसके वैश्विक परिदृश्य में उभरना है। भारतीय अर्थव्यवस्था अस्सी के प्रारम्भिक दशक से निम्न वकास दर की बे ड़यों से मुक्त हुई है। नब्बे के दशक के मध्य तकए 1991.3 के आ र्थक सुधारों के परिणामस्वरूप भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण भू मका का निर्वहन करने वाले देश के रूप में अपनी पहचान बनानी प्रारम्भ की है। तत्पश्चात् नब्बे के दशक के अन्त में पूर्वी ए शयाई संकट के परिणामस्वरूप और 21वीं सदी के पहले दशक के प्रारम्भिक वर्षों से भारत ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। भारत का निर्यात बढ़ने लगा इसका वदेशी मुद्रा भण्डार जो कई दशकों से लगभग 5 बि लयन डालर के आसपास रहा, उसमें आ र्थक सुधारों के बाद अ धका धक बढ़ोतरी होती गयी और एक दशक से कम समयाव ध में यह बढ़कर 300 बि लयन डालर हो गया। भारतीय उद्योगपति जिन्होंने कभी-कभार भारत से बाहर जाने का जो खम उठायाए वे अचानक सम्पूर्ण वश्व में और यहां तक क कुछ औद्यो गक देशों में निवेश करने लगे। जब 2009 में समूह 20 के समूह ज़ी-20, को नेताओं के मंच स्तर तक बढ़ाया तो भारत उस वैश्विक नीति समूह का महत्वपूर्ण सदस्य था। भारत के उदारीकरण से नए अवसर सामने आए ले कन इससे नई चुनौतियां तथा दायित्व भी पैदा हुए। इसका अ भप्राय है क वैश्विक अर्थव्यवस्था को अब केवल दर्शक के नजरिए से नहीं देखा जा सकता। भारत में इसके व्यापक निहितार्थ हैं। प्रत्येक समय वश्व के कसी न कसी भाग में मुख्य वत्तीय संकट बना रहा है, इस लए ठोस रवैया अपनाने की जरूरत है। साथ ही, भारत भी वकास दर में बढ़ोत्तरी तथा गरावट का वैश्विक वकास पर प्रभाव पड़ता रहा है और भारत को इस दायित्व को गंभीरता से ग्रहण करने की जरूरत है। यह अध्याय जो आखथक समीक्षा में नया जोड़ा गया है, इस वास्त वकता का प्रमाण है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति की जांच करता है और भारत की उसमें स्थिति को भी दर्शाता है। यह मौजूदा वैश्विक मंदी तथा यूरोजोन संकट का वश्लेषण करता है जिसका भारत तथा नीतिगत चुनौतियों के लए इस रूप में मायने हैं क इन अन्तरराष्ट्रीय मामलों का देशीय परिपेक्ष्य में महत्व है। यह अध्याय जी-20 पर भी वचार करता है और इसकी भारत की बदलती

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वैश्विक व्यवस्था में रचनात्मक भागीदार के रूप में भी भू मका है। हाल के वर्षों में मुद्रास्फीति भारतीय अर्थव्यवस्था के लए एक महत्वपूर्ण चुनौती रही है। मुद्रास्फीति समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में सामान्य वृ द्ध को संद भत करती है। मुद्रास्फीति व्यक्तियों की क्रय शक्ति को कम करती है और आ थक वकास में गरावट का कारण बन सकती है। भारत में, मुद्रास्फीति एक सतत समस्या रही है, और सरकार ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लए व भन्न उपायों को लागू कया है।

अध्ययन की आवश्यकता

वत्तीय वकास को नीतियों, कारकों और संस्थानों के रूप में परिभा षत कया जा सकता है जो कुशल मध्यस्थता और प्रभावी वत्तीय बाजारों की ओर ले जाते हैं। एक मजबूत वत्तीय प्रणाली जो खम व वधीकरण और प्रभावी पूंजी आवंटन प्रदान करती है। वत्तीय वकास जितना अ धक होगा, बचत का जुटान और उच्च रिटर्न वाली परियोजनाओं के लए इसका आवंटन उतना ही अ धक होगा। वत्तीय वकास को कई कारकों द्वारा मापा जा सकता है, जिसमें वत्तीय प्रणाली की गहराई, आकार, पहुंच और सुदृढ़ता शा मल है। इसे वत्तीय बाजारों, बैंकों, बॉन्ड बाजारों और वत्तीय संस्थानों के प्रदर्शन और गति व धयों की जांच करके मापा जा सकता है। यह देखा गया है क कसी देश में वत्तीय वकास की डग्री जितनी अ धक होगी, वत्तीय सेवाओं की उपलब्धता उतनी ही व्यापक होगी। अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लए एक अच्छी तरह से संर चत वत्तीय प्रणाली महत्वपूर्ण है, ले कन मुख्य सवाल यह है क वत्तीय वकास को कैसे मापा जाए।

भारतीय अर्थव्यवस्था में वकास और मुद्रास्फीति:

भारत में सकल घरेलू उत्पाद की वकास दर 1970 के दशक में 3.5% से बढ़कर 1980 के दशक में 5.5% हो गई। वकास में इस वृ द्ध के लए मांग और आपूर्ति पक्ष दोनों कारकों को जिम्मेदार ठहराया गया है। ले कन यह सुझाव दिया गया है क 'केने सयन वस्तार', या उच्च सरकारी खर्च और बड़े राजकोषीय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

घाटे के कारण कुल मांग में वृ द्ध, मुख्य रूप से वकास दर (जोशी और लटिल 1994) को बढ़ाने के लए जिम्मेदार थी। 1980 के दशक की शुरुआत में सार्वजनिक निवेश तेजी से बढ़ रहा था, ले कन दशक के दूसरे छमाही में यह धीमा हो गया और सरकारी उपभोग व्यय बहुत तेज गति से बढ़ा। राजस्व घाटा बढ़ा, यह दर्शाता है क सरकारी खपत को उधार द्वारा वत्तपो षत कया जा रहा था, जिसमें ब्याज और पुनर्भुगतान प्रतिबद्धताएं शा मल थीं। कम से कम अल्पाव ध में उत्पादन वृ द्ध को बढ़ाने में वस्तारवादी राजकोषीय नीतियों की सफलता का आं शक श्रेय पूर्ववर्ती वर्षों में उत्पादक क्षमता के कम उपयोग को दिया जा सकता है। 1980 के दशक के अंत तक, जब उत्पादन प्रवृत्ति के स्तर से ऊपर था, राजकोषीय नीति प्रणाली में अतिरिक्त मांग का निर्माण करती रही (जोशी और लटिल 1994)।

वत्तीय क्षेत्र के सुधार में मुख्य रूप से वैधानिक तरलता अनुपात में कमी और प्राथ मकता वाले क्षेत्रों के लए रियायती ऋण का युक्तिकरण, ब्याज नियंत्रण में छूट और फर्मों की पूंजी बाजार तक पहुंच पर प्रतिबंध और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लए अ धक स्वायत्तता शा मल है। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के मामले में 6 प्रमुख सुधारों में बाहरी और घरेलू प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा और बजट और बैंक संसाधनों तक अ धमान्य पहुंच जैसे वशेषा धकारों को समाप्त करना शा मल था। हालां क निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में पैसा खोने वाली फर्मों को बंद करने या पुनर्गठन के लए एक प्रभावी 'निकास नीति' से संबं धत शर्त पूरी नहीं की गई है, कए गए सुधार काफी हद तक कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप रहे हैं।

आय वतरण, गरीबी और मानव वकास पर वत्तीय वकास के प्रभाव की जांच

सीर्स (1969) ने कहा क वकास बढ़ती अर्थव्यवस्था के भीतर गरीबी, असमानता और बेरोजगारी में कमी के साथ होता है। गरीबी कम करने के लए, बेक एट अल। (2007) सुझाव देते हैं क वत्तीय वकास गरीबों की आय को बढ़ाता है और असमानता को कम करता है। सहाक एट अल के आधार पर। (2012), इस वत्तीय वकास को गहराई, पहुंच और दक्षता के संयोजन के रूप में परिभा षत कया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

साहित्य के एक बड़े निकाय ने आ र्थक वकास, असमानता और गरीबी में कमी पर वत्तीय वकास के प्रभाव का आकलन कया (क्वार्टी, 2005; धृफी, 2015; अबोसेद्रा एट अल।, 2015; हो और इयके 2018; टे कन और सने, 2020 अन्य के बीच)। हालाँ क, आय के वतरण और गरीबी में कमी पर परस्पर वरोधी दृष्टिकोण है, वत्तीय वकास में वत्तीय प्रणा लयों द्वारा प्रदान कए गए कार्यों में कल्याणकारी सुधार शा मल हैं जैसे बचत की पू लंग, उत्पादक निवेशों के लए पूंजी आवंटन, निवेश निगरानी, जो खम व वधीकरण और वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान (डे मरगुक-कंट और लेवाइन, 2009)।

अनुसंधान क्रया व ध

3.1 परिचय

अनुसंधान प्र क्रया एक ऐसा तरीका है जिसका उपयोग अनुसंधान समस्या को ठीक से हल करने के लए कया जाता है। अनुसंधान और प्रारं भक वकास एक स्व च कत तरीके से कया जाने वाला काम है जिसका उद्देश्य जानकारी के भार को एकत्र करना होता है। अनुसंधान प्र क्रया में व भन्न कदम शा मल होते हैं जो आमतौर पर एक शोधकर्ता द्वारा अनुसंधान समस्या की जांच करने के लए अपनाए जाते हैं। इस अध्याय में अनुसंधान के उद्देश्य और उपकरण, अनुसंधान डज़ाइन, डेटा के स्रोत, डेटा संग्रह व धयाँ और डेटा वश्लेषण उपकरण जैसे कई मुद्दे शा मल होते हैं, जो अध्ययन में प्रयुक्त होते हैं।

एक तरफ, अनुसंधान समस्या की जांच के दौरान यदि परिणाम उन उद्देश्यों से जुड़े होते हैं तो ही वे संतोषजनक माने जा सकते हैं। यह अध्याय उन प्रमुख डेटा का वश्लेषण करने के लए ढां चत है जिन्हें प्राय: प्राप्त कया जाता है एक प्रश्नावली के प्रयोग से ता क उपयोगी परिणाम और सहायक सफारिशें उत्पन्न की जा सकें।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

3.2 अनुसंधान डज़ाइन

सहायक डेटा, अनुसंधान के प्र क्रया में एक महत्वपूर्ण अंश होता है जो अध्ययन के उद्देश्य को समर्थन प्रदान करता है। यह डेटा जो संग्रहित या उपलब्ध होता है, पर्याप्त संख्या में उपयोगकर्ताओं से प्राप्त कया जाता है ता क अनुसंधान में उपयुक्त परिणाम प्राप्त कए जा सकें। सहायक डेटा वश्लेषण, तुलना, और निष्कर्षों को समझने में मदद करता है। यह डेटा साक्षात्कार, प्रश्नपत्र, अनुज्ञापत्र, खोज-पत्रिकाएँ आदि के रूप में हो सकता है। सहायक डेटा की गुणवत्ता और मान्यता महत्वपूर्ण होती है, इस लए डेटा संग्रहण के समय इसकी सावधानी बरतना आवश्यक होता है। सहायक डेटा की वश्लेषण से प्राप्त नतीजों को समर्थन मलता है और अध्ययन की मान्यता को बढ़ावा मलता है, जिससे अनुसंधान के परिणाम और सफारिशों में वश्वास होता है।

इस अध्ययन में सरकारी रिपोर्टें से आपको व भन्न प्रकार की महत्वपूर्ण डेटा और जानकारी प्राप्त होती है , जिनमें निम्न ल खत प्रकार की बातें शा मल हो सकती हैं:

आ र्थक वकास: सरकारी रिपोर्टें आपको देश के आ र्थक वकास की स्थिति, जीडीपी ग्रोथ रेट, वत्तीय संरचना, वकास के क्षेत्रों में निवेश, उद्य मता की स्थिति, और आ र्थक स्थिरता के बारे में महत्वपूर्ण डेटा प्रदान कर सकती है।

आ र्थक वकास एक राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर आ र्थक सुधार और प्रगति की प्र क्रया है। यह वत्तीय स्थिति, उत्पादन, रोजगार, आय, और वत्तीय सेवाओं के क्षेत्र में सुधार की दिशा में प्रयासों को संकेत करता है। आ र्थक वकास समाज में आय की वतरण में समानता, गरीबी की घटान, और निवेश के माध्यम से उत्पादन को बढ़ावा देने का माध्यम हो सकता है। यह स्थायित और समृ द्ध की दिशा में राष्ट्र की प्रगति को सुनिश्चित करने में मदद करता है और लोगों के जीवन में सुधार लाता है। आ र्थक वकास सुस्त गति वाले क्षेत्रों को सक्षम बनाने, नौकरियों की वृ द्ध, और बाजारों की नई दिशाएँ खोलने में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मुद्रास्फीति: आपके अध्ययन में मुद्रास्फीति के प्रति सरकार की नीतियों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण हो सकता है। रिपोर्टें आपको मुद्रा दरों के परिवर्तन, मुद्रा संरचना के बदलाव, वदेशी मुद्रा संक्रमण के प्रति दिशा निर्देश और उसके प्रभाव, और व भन्न मुद्राओं के प्रति दिशा निर्देश प्रदान कर सकती हैं।

वत्तीय वकास: सरकारी रिपोर्टें आपको वत्तीय संरचना, बैं कंग क्षेत्र के वकास, वत्तीय सेवाओं की उपलब्धता, वत्तीय समावेशन की स्थिति, और वत्तीय समावेशन के प्रति सरकार की प्रोत्साहन नीतियों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकती है। वत्तीय वकास एक राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर वत्तीय सेवाओं, बाजारों और वत्तीय संस्थानों की सुधार और वकास की प्र क्रया है। इसका उद्देश्य वत्तीय सस्टम को सुदृढ़ बनाना, वत्तीय स्थिति में सुधार करना, और सामाजिक और आ र्थक सुरक्षा की स्थिति में सुधार करना होता है। वत्तीय वकास समाज में निवेश को बढ़ावा देता है, उत्पादकता को बढ़ावा देता है, उद्य मता को प्रोत्साहित करता है, और आ र्थक समृ द्ध की दिशा में प्रगति कराता है। यह वत्तीय समावेशन की सुधार करने, वत्तीय सेवाओं की पहुंच को बढ़ावा देने, और निवेश के अवसरों को मजबूत करने में मदद करता है। वत्तीय वकास समाज और अर्थव्यवस्था के व भन्न पहलुओं को संर चत और समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है।

परिणाम और चर्चा

अर्थव्यवस्था की स्थिति

सामान्य तौर पर, अतीत में वैश्विक आ र्थक झटके गंभीर थे ले कन समय के साथ समाप्त हो गए। इस सहस्राब्दी के तीसरे दशक में यह बदल गया। 2020 के बाद से वैश्विक अर्थव्यवस्था को कम से कम तीन झटके लगे हैं। यह सब वैश्विक उत्पादन में महामारी से प्रेरित संकुचन के साथ शुरू हुआ, इसके बाद रूसी-यूक्रेन संघर्ष के कारण दुनिया भर में मुद्रास्फीति में वृ द्ध हुई। फर, फेडरल रिजर्व के नेतृत्व में सभी अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय बैंकों ने मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के लए समका लक नीति दर में बढ़ोतरी का जवाब दिया। यूएस फेड द्वारा दरों में बढ़ोतरी से अमेरिकी बाजारों में पूंजी प्रवाहित हुई,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जिससे अ धकांश मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर में तेजी आई। इससे चालू खाता घाटा (सीएडी) बढ़ गया और शुद्ध आयात करने वाली अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ गया। दर वृ द्ध और लगातार मुद्रास्फीति के कारण आईएमएफ ने वश्व आ थक आउटलुक के अक्टूबर 2022 के अपडेट में 2022 और 2022 के लए वैश्विक वकास पूर्वानुमान को कम कर दिया। चीनी अर्थव्यवस्था की कमज़ोरियों ने वकास पूर्वानुमानों को कमज़ोर करने में और योगदान दिया। मौद्रिक सख्ती के अलावा धीमी वैश्विक वृ द्ध से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से उत्पन्न वत्तीय संक्रमण भी हो सकता है, जहां गैर-वत्तीय क्षेत्र का ऋण वैश्विक वत्तीय संकट के बाद से सबसे अ धक बढ़ गया है। वक सत अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति बरकरार रहने और केंद्रीय बैंकों द्वारा दरों में और बढ़ोतरी के संकेत देने से वैश्विक आ थक परिदृश्य में गरावट का जो खम बढ़ा हुआ दिखाई दे रहा है। हालाँ क, ऐसा प्रतीत होता है क भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी से मुकाबला करने के बाद आगे बढ़ी है, कई देशों की तुलना में वत्त वर्ष 2022 में पूरी तरह से ठीक हो गई है और वत्त वर्ष 2022 में खुद को महामारी-पूर्व वकास पथ पर चढ़ने के लए तैयार कर रही है। फर भी चालू वर्ष में, भारत को यूरोपीय संघर्ष के कारण बढ़ी मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने की चुनौती का भी सामना करना पड़ा है। सरकार और आरबीआई द्वारा उठाए गए कदमों के साथ-साथ वैश्विक कमो डटी की कीमतों में नरमी से आ खरकार नवंबर 2022 में खुदरा मुद्रास्फीति को आरबीआई के ऊपरी सहनशीलता लक्ष्य से नीचे लाने में कामयाबी मली है। हालां क, रुपये के मूल्यह्रास की चुनौती, हालां क अ धकांश अन्य मुद्राओं की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर रही है। , यूएस फेड द्वारा नीतिगत दरों में और बढ़ोतरी की संभावना बनी हुई है। सीएडी का बढ़ना भी जारी रह सकता है क्यों क वैश्विक कमो डटी कीमतें ऊंची बनी हुई हैं और भारतीय अर्थव्यवस्था की वकास गति मजबूत बनी हुई है। निर्यात प्रोत्साहन का नुकसान और भी संभव है क्यों क वश्व की धीमी वृ द्ध और व्यापार के कारण चालू वर्ष की दूसरी छमाही में वैश्विक बाजार का आकार सकुड़ गया है। इनके बावजूद, दुनिया भर की एजें सयां भारत को वत्त वर्ष 2022 में 6.5-7.0 प्रतिशत की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में पेश कर रही हैं। ये आशावादी वकास पूर्वानुमान कुछ हद

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तक भारतीयों के लचीलेपन से उपजे हैं अर्थव्यवस्था में निजी उपभोग की वापसी देखी गई जो निर्यात प्रोत्साहनों को वकास के अग्रणी चालक के रूप में प्रतिस्था पत कर रही है। निजी खपत में बढ़ोतरी ने उत्पादन गति व ध को भी बढ़ावा दिया है जिसके परिणामस्वरूप सभी क्षेत्रों में क्षमता उपयोग में वृ द्ध हुई है। खपत में उछाल सरकार की देखरेख में लगभग सार्वभौ मक टीकाकरण कवरेज द्वारा इंजीनियर कया गया था, जिसने लोगों को रेस्तरां, होटल, शॉ पंग मॉल और सनेमाघरों जैसी संपर्क-आधारित सेवाओं पर खर्च करने के लए सड़कों पर वापस ला दिया। 2 बि लयन से अ धक खुराक वाले दुनिया के दूसरे सबसे बड़े टीकाकरण अ भयान ने भी उपभोक्ता भावनाओं को ऊपर उठाने का काम कया, जो खपत में उछाल को लम्बा खींच सकता है। टीकाकरण ने प्रवासी श्र मकों को निर्माण स्थलों पर काम करने के लए शहरों में लौटने की सु वधा प्रदान की है क्यों क खपत में उछाल आवास बाजार में फैल गया है। यह आवास बाजार में स्पष्ट है, जिसमें पछले वर्ष के 42 महीनों से वत्त वर्ष 2022 की तीसरी तिमाही में इन्वेंट्री ओवरहैंग में 33 महीनों की महत्वपूर्ण गरावट देखी गई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक आ र्थक और वकास चुनौतियाँ

भारत पर महामारी का प्रभाव वत्त वर्ष 2021 में एक महत्वपूर्ण सकल घरेलू उत्पाद संकुचन के रूप में देखा गया। अगले वर्ष, FY22, भारतीय अर्थव्यवस्था जनवरी 2022 की ओमीक्रॉन लहर के बावजूद ठीक होने लगी। इस तीसरी लहर ने भारत में आ र्थक गति व धयों को उतना प्रभा वत नहीं कया, जितना जनवरी 2020 में फैलने के बाद से महामारी की पछली लहरों ने कया था। गतिशीलता द्वारा सक्षम कया गया स्थानीयकृत लॉकडाउन, तेजी से टीकाकरण कवरेज, हल्के लक्षण और वायरस से त्वरित रिकवरी ने 2022 की जनवरी-मार्च तिमाही में आ र्थक उत्पादन के नुकसान को कम करने में योगदान दिया। नतीजतन, वत्त वर्ष 2022 में उत्पादन वत्त वर्ष 2020 में अपने पूर्व-महामारी स्तर से आगे निकल गया। अर्थव्यवस्था कई देशों से आगे पूर्ण सुधार की ओर अग्रसर है। ओ मक्रॉन संस्करण के साथ अनुभव ने एक सतर्क आशावाद पैदा कया क महामारी के बावजूद शारीरिक रूप से गतिशील रहना और आ र्थक गति व धयों में संलग्न रहना संभव था। इस प्रकारइस दृढ़ वश्वास के साथ शुरू हुआ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क महामारी तेजी से कम हो रही है और भारत तेज गति से बढ़ने और महामारी-पूर्व वकास पथ पर तेजी से चढ़ने के लए तैयार है।

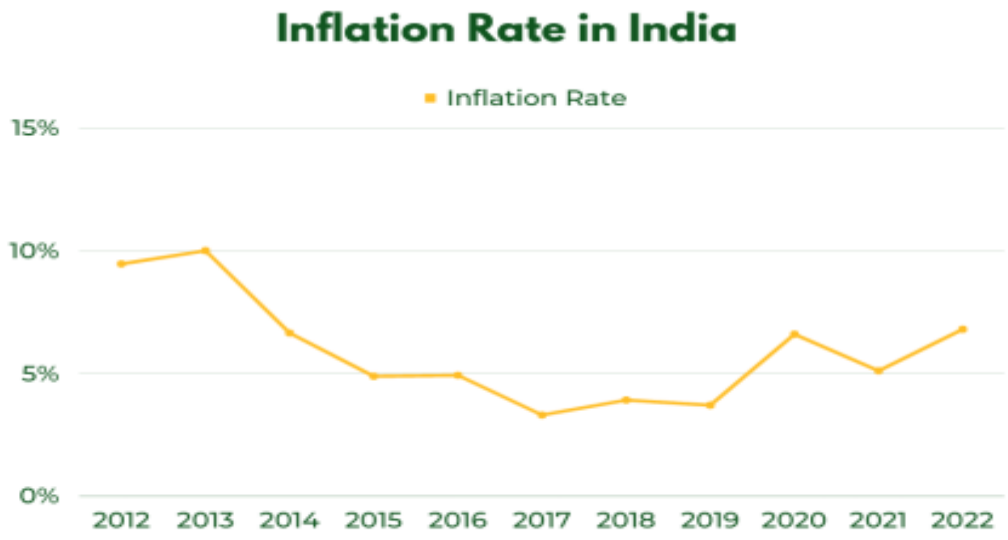

Figure 4.1: आ र्थक वकास लचीला

मांग और निवेश द्वारा संचा लत व्यापक-आधारित वकास

YoY growth of real GVA components Share of real GDP components

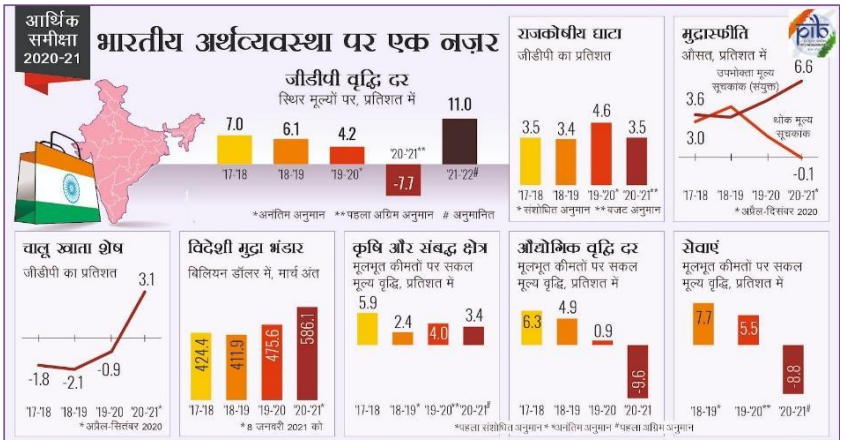

Figure 4.2: मांग और निवेश द्वारा संचा लत व्यापक-आधारित वकास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

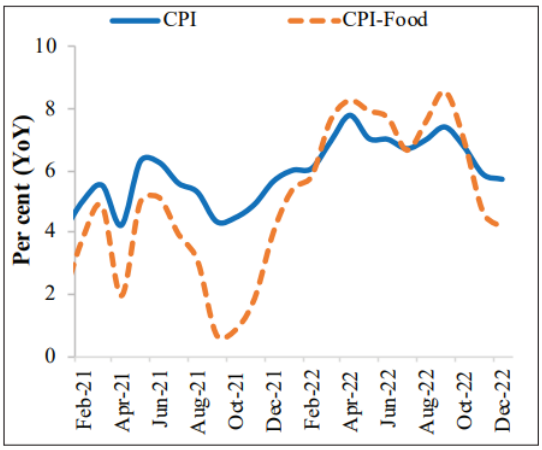

Source: MoSPI

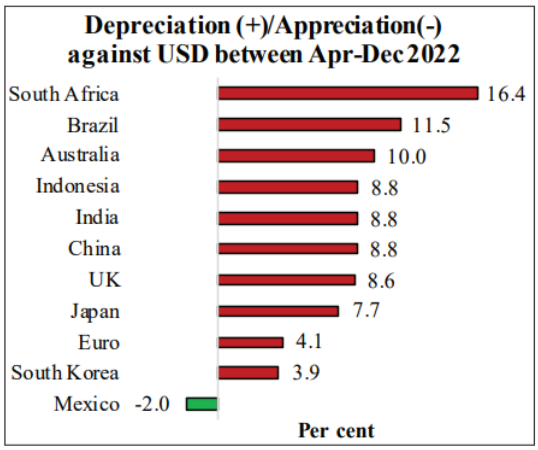

Source: Bloomberg, RBI (Exchange rates for December as on 31st Dec 2022)

Fig 4.3 सीपीआई मुद्रास्फीति आरबीआई लक्ष्य सीमा

हालाँ क, यूरोप में संघर्ष के कारण वत्त वर्ष 2022 में आ र्थक वकास और मुद्रास्फीति की उम्मीदों में संशोधन की आवश्यकता हुई। जनवरी 2022 में देश की खुदरा मुद्रास्फीति आरबीआई की सहनशीलता सीमा से ऊपर पहुंच गई थी। नवंबर 2022 में 6 प्रतिशत की लक्ष्य सीमा के ऊपरी छोर से नीचे लौटने से पहले यह दस महीने तक लक्ष्य सीमा से ऊपर रही। उन दस महीनों के दौरान, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वृ द्ध हुई कमो डटी की कीमतों ने भारत की खुदरा मुद्रास्फीति में योगदान दिया, साथ ही अत्य धक गर्मी और बेमौसम बारिश जैसी स्थानीय मौसम की स्थिति ने भी खाद्य पदार्थों की कीमतों को ऊंचा रखा। सरकार ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लए उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क में कटौती की और निर्यात को प्रतिबं धत कर दिया, जब क अन्य केंद्रीय बैंकों की तरह आरबीआई ने रेपो दरें बढ़ा दीं और अतिरिक्त तरलता वापस ले ली।

मौद्रिक सख्ती के साथ, अमेरिकी डॉलर रुपये सहित कई मुद्राओं के मुकाबले मजबूत हुआ है। हालाँ क, रुपया दुनिया भर में बेहतर प्रदर्शन करने वाली मुद्राओं में से एक रहा है, ले कन इसके मामूली अवमूल्यन ने सीएडी को बढ़ाने के अलावा घरेलू मुद्रास्फीति के दबाव को बढ़ा दिया है। वैश्विक कमो डटी कीमतें भले ही कम हो गई हैं ले कन संघर्ष-पूर्व स्तरों की तुलना में अभी भी ऊंची हैं। उन्होंने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सीएडी को और बढ़ाया है, जो पहले से ही भारत की वकास गति से बढ़ा हुआ है।के लए, भारत के पास CAD को वत्तपो षत करने और भारतीय रुपये में अस्थिरता को प्रबं धत करने के लए वदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करने के लए पर्याप्त वदेशी मुद्रा भंडार है।

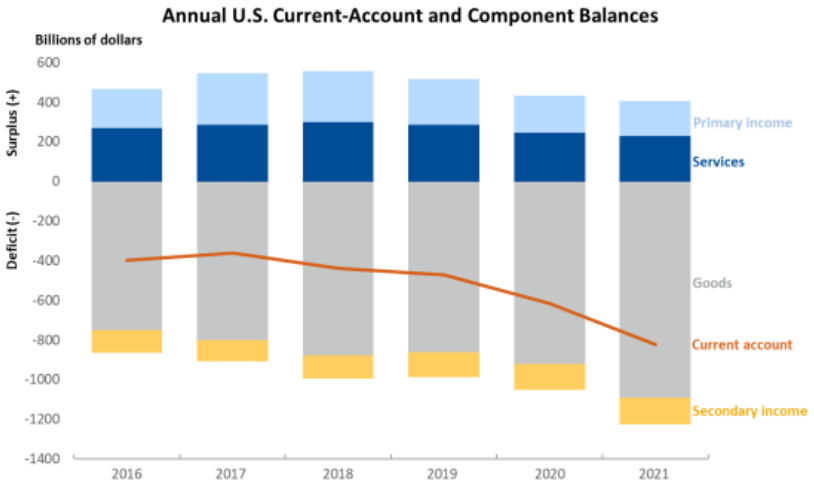

Fig 4.4 चालू खाता घाटा बढ़ा

भारत सहित दुनिया भर के कई देशों के लए, 2021 स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्थाओं के लए महामारी के प्रभाव से उबरने का काल था। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लए, वशेष रूप से, उनकी सरकारों द्वारा पहले दिए गए भारी राजकोषीय प्रोत्साहन ने मजबूत मांग पुनरुद्धार का समर्थन कया। इसके बाद वश्व व्यापार में वृ द्ध हुई, जिसका भारत भी लाभार्थी रहा। वत्त वर्ष 2022 में भारत का निर्यात बढ़ा और यह गति वत्त वर्ष 2022 की पहली छमाही तक बनी रही। निर्यात वृ द्ध इतनी मजबूत थी क माल निर्यात के वश्व बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ गई। हालाँ क, आक्रामक और समका लक मौद्रिक सख्ती के कारण, वैश्विक आ र्थक वकास धीमा होना शुरू हो गया है, और इसी तरह वश्व व्यापार भी धीमा हो गया है। व्यापार और वकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (अंकटाड) के नवीनतम वैश्विक व्यापार अद्यतन के अनुसार, H2:2022 के दौरान वैश्विक व्यापार वृ द्ध नकारात्मक हो गई, और भू-राजनीतिक घर्षण, लगातार मुद्रास्फीति के दबाव और कम मांग के कारण 2022 में वैश्विक व्यापार को और दबाने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की उम्मीद है। चालू वर्ष की शुरुआत में दिखाए गए वादे की तुलना में, वत्त वर्ष 24 में सुस्त निर्यात जारी रहने की संभावनाओं के साथ, भारत सहित कई देशों को प्रभा वत करने की संभावना है।

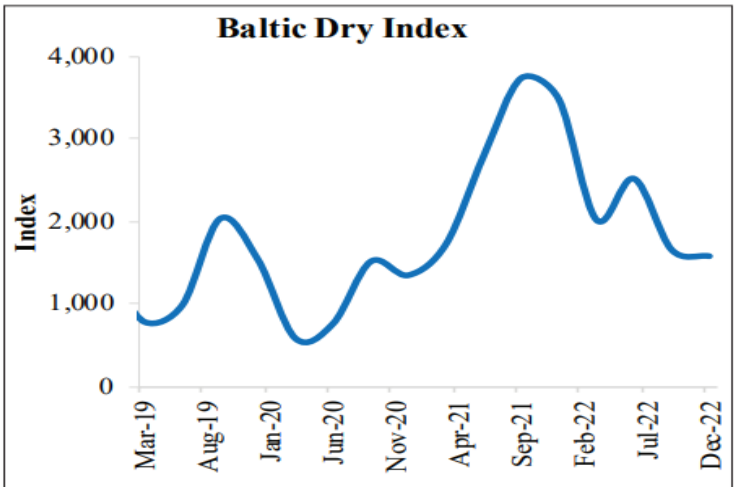

Fig 4.5 व्यापार धीमा होने से श पंग माल ढुलाई लागत में गरावट

निष्कर्ष

भारत में वत्तीय वकास, मुद्रास्फीति, और आ थक वकास के अध्ययन से हमें यह स्पष्ट होता है क आ थक प्रगति की प्र क्रया में कई प्रासं गक चुनौतियाँ और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। मुद्रास्फीति की चुनौती से लड़ने के लए सुसंगत नीतियों की आवश्यकता है जो मुद्रा की स्थिरता और समृ द्ध को सुनिश्चित कर सकें। आ थक वकास की दिशा में भारत को उच्च गति से प्रगति करने के लए निवेश, उद्य मता, और सु वधाओं में सुधार की आवश्यकता है।

वत्तीय वकास के संदर्भ में, भारत सरकार के नीतिगत प्रयासों ने वत्तीय समावेशन में सुधार की दिशा में प्रगति की है। बैं कंग सेक्टर में अपने निवेशों को सुर क्षत और उत्तरदायित्वपूर्ण बनाने के लए नए नियमों और नियमों के प्राथ मकता देने का प्रयास कया गया है।

मुद्रास्फीति के मामले में, निय मत मॉनिटरिंग और अच्छे नीतिगत निर्णय के माध्यम से मुद्रा की स्थिरता को बनाए रखने की आवश्यकता है। व भन्न आ थक क्षेत्रों में दिग्गज अनुसंधान और वश्लेषण के माध्यम से मुद्रास्फीति के प्रभावों का सामना कया जा सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आ र्थक वकास की दिशा में, सरकार को सु वधाओं, निवेशों, और उद्य मता के क्षेत्र में सुधार की दिशा में प्राथ मकता देनी चाहिए। गरीबी के खलाफ लड़ाई, नौकरियों की वृ द्ध, और समाज के निर्माण में योगदान के लए उद्य मता को प्रोत्साहित करने के लए नीतियां तैयार करनी चाहिए।

सम र्पतता से, वत्तीय वकास, मुद्रास्फीति, और आ र्थक वकास के क्षेत्र में सुधार और सफलता पाने के लए नीतियों की सुनिश्चित पालन की आवश्यकता होती है। सही दिशा और सामर्थ्य से नीतिगत प्रयासों के माध्यम से हम भारत को आ र्थक वकास की ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।

आधुनिक युग में, आ र्थक वकास और समृ द्ध का मापदंड अ धकतर वत्तीय पैरामीटरों द्वारा होता है। आ र्थक नीतियां और उपायों का व्यवसायिक माध्यमों के साथ मलकर सुनिश्चित कया जाना चाहिए ता क सामाजिक और आ र्थक समृ द्ध की दिशा में सही दिशा में प्रगति की जा सके।

संदर्भ

1. आलम, मोहम्मद समसुल, मुहम्मद शाहबाज और सुदर्शन रेड्डी परमती। "जीवन प्रत्याशा पर वत्तीय वकास और आ र्थक दुख की भू मका: भारत में वत्तीय सुधारों के बाद के साक्ष्य। *सामाजिक संकेतक अनुसंधान* 128 (2): 481–97. दोई: 10.1007/s11205-015-1040-4.
2. आलम, मोहम्मद शब्बीर, मुस्तफा रजा रब्बानी, मोहम्मद रुमजी तौसीफ और जोजी अबे। "भारत में बैंकों का प्रदर्शन और आ र्थक वकास: एक पैनल सह-एकीकरण वश्लेषण। *अर्थव्यवस्थाएं* 9 (1): 1–13. दोई: 10.3390/
3. ली जे। "गुणांक अल्फा और परीक्षणों की आंतरिक संरचना। *साइकोमेट्रिका* 16 (3): 297–334. दोई: 10.1007/

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

4. ढाल, शरत, पूर्णेंदु कुमार और जुगनू अंसारी। "एक अनुभवजन्य प्रतिबिंब। 32(3).
5. वत्तीय, वकास और वकास रिपोर्ट। *वत्तीय वकास रिपोर्ट 2008.*
6. गोस्पोडारचुक, गै लना और एलेना ज़ेलेनेवा। " वत्तीय परिसंपत्तियों के मैट्रिक्स के आधार पर देशों के वत्तीय वकास का आकलन। *अर्थव्यवस्थाएं* 10 (5): 1–18. दोई: 10.3390/
7. गुरु, बिप्लब कुमार और इंदर शेखर यादव। " वत्तीय वकास और आ र्थक वकास: ब्रिक्स से पैनल साक्ष्य। *जर्नल ऑफ इकोनॉ मक्स, फाइनेंस एंड एड मनिस्ट्रेटिव साइंस* 24 (47): 113–26. दोई: 10.1108 / JEFAS-12-2017-0125।
8. हबीबी, फतेह, मेहरान रहमती और अदेल करीमी। "ईरान के प्रांतों में आ र्थक वकास के लए पर्यटन का योगदान: जीडीएम दृष्टिकोण। *फ्यूचर बिजनेस जर्नल* 4 (2): 261–71. दोई: 10.1016/
9. हसन, रा शदुल। "भारत में वत्तीय प्रणाली का वकास: वत्तीय गहराई और पहुंच का आकलन। 5(8):43–52.
10. इब्राहिम, मुआज़ू, ओलुफेमी अदेवाले अलुको, और जुआन वन्ह वो। " वत्तीय वकास में मुद्रास्फीति की भू मका- उप-सहारा अफ्रीका में आ र्थक वकास लंक। *कोजेंट अर्थशास्त्र और वत्त* 10 (1) दोई: 10.1080/23322039.2022.2093430।
11. कमरुद्दीन, फकारुदीन, फदज़लान सू फयान, फूंग वेई लूंग, और नज़रतुल ऐना मोहम्मद अनवर। "घरेलू और वदेशी इस्लामी बैंकों की दक्षता का आकलन: चयनित द क्षण पूर्व ए शयाई देशों से अंतर्दृष्टि। *फ्यूचर बिजनेस जर्नल* 3 (1): 33–46. दोई: 10.1016/
12. मैकडोनाल्ड, मार्गोक्स और तेंगतेंग जू। "भारत में वत्तीय क्षेत्र और आ र्थक वकास, डब्ल्यूपी /22/137, जुलाई 2022।
13. राकेश मोहन, और पार्थ रे। "भारतीय वत्तीय क्षेत्र: संरचना, रुझान और मोड़। *आईएमएफ व र्कंग पेपर्स* 17 (7): 1. दोई: 10.5089/9781475570168.001।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

14. - मुचैरेरा, पेड्रो रिबेरो, मरीना गो डन्हो एंट्यून्स, नुनो अब्रांजा, मारिया रोसारियो टेक्सीरा जस्टिनो, और जो कन टेक्सीरा क्विरोस। "होटलों की वत्तीय स्थिरता में पर्यटन की प्रासं गकता" (पीडीएफ). *प्रबंधन और व्यापार अर्थशास्त्र पर यूरोपीय अनुसंधान* 25 (3): 165–74. दोई: 10.1016 /

15. मुश्ताक, सबा और दानिश अहमद सद्दीकी। "बैंक जमा पर ब्याज दर का प्रभाव: इस्लामी और गैर-इस्लामी अर्थव्यवस्थाओं से साक्ष्य। *फ्यूचर बिजनेस जर्नल* 3 (1): 1–8. दोई: 10.1016 /

16. ओहलान, रामफुल। "भारत में पर्यटन, वत्तीय वकास और आ र्थक वकास के बीच संबंध" (पीडीएफ). *फ्यूचर बिजनेस जर्नल* 3 (1): 9–22. दोई: 10.1016/

17. ओज़तुर्क, नुरेटिन और कादिर करागोज़। "मुद्रास्फीति और वत्तीय वकास के बीच संबंध: तुर्की से साक्ष्य। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अलानिया फैकल्टी ऑफ बिजनेस* 4 (2): 81-87।

18. पंसी, क्रश्चियन पी। "कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में वत्तीय वकास और आ र्थक वकास के बीच कारण प्रकृति पर: क्या यह आपूर्ति अग्रणी है या मांग निम्न ल खत है?" *जर्नल ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन फाइनेंस* 11 (2): 96. दोई: 10.14505 /

19. पुआत्वो, जेनिस टिगुहोंग, और सर्गे मैं डफे पयाबुओ। " वत्तीय क्षेत्र वकास और आ र्थक वकास: कैमरून से साक्ष्य। *वत्तीय नवाचार* 3 (1) दोई: 10.1186/s40854-017-0073-x।

20. रीड, रिचर्ड। " वत्तीय वकास: एक व्यापक परिप्रेक्ष्य। *उभरते बाजारों में वत्तीय बाजार वनियमन और सुधार* (258): 203–25. दोई: 10.2139/

21. सफदर, मेहदी, मसूद अबूई मेहरीजी और मरजी इलाही। "ईरान में वत्तीय वकास और आ र्थक वकास। *अर्थशास्त्र, वत्त और प्रशासनिक वज्ञान के यूरोपीय जर्नल* (36): 115–22. दोई: 10.1177 139156141001100206/

22. सेगीर, गुए लल मोहम्मद, बेलमोकडडेम मुस्तफा, सहराउई मोहम्मद अब्बेस, और घोउली

International Journal of Research in Economics and Social Sciences
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

या सन ज़कारिया। "49 देशों में पर्यटन खर्च-आ र्थक वकास कार्य-कारण: एक गतिशील पैनल डेटा दृष्टिकोण। *प्रोसे डया अर्थशास्त्र और वत्त* 23 (अक्टूबर 2014): 1613–23. दोई: 10.1016/s2212-5671 (15)00402-5.

23. समवाका, कसु, थॉमस मुंथली, ऑस्टिन चउ मया और ग्रांट कबांगो। "मलावी में वत्तीय वकास और आ र्थक वकास: एक अनुभवजन्य वश्लेषण। *बैंक और बैंक सस्टम* 7 (3): 85-96।